धान के प्रमुख कीट एवं उनके रोकथाम

अजीत पाण्डेय [1], आदित्य पटेल [2], अंकित उपाध्याय [3], दिव्यांश पटेल [4] एवं प्रमोद कुमार [5]
बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बांदा, उत्तर प्रदेश [1],
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय मेरठ, उत्तर प्रदेश [2,5]
चंद्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश [3]
बाबा राघव दास पीजी कॉलेज देवरिया, उत्तर प्रदेश [4]

प्रस्तावना

धान भारत समेत कई एशियाई देशों के खरीफ ऋतु की मुख्य खाद्य फसल है इतना ही नहीं विश्व में मक्का के बाद जिस फसल को सबसे ज्यादा बोया और उगाया जाता है वो धान ही है जिसका वै. ज्ञानिक नाम ओराईजा सेटाईवा तथा यह ग्रेमिनी या पोएसी कुल का फसल है खरीफ ऋतु की मुख्य फसल धान भारत के साथ-साथ अन्य देशों जैसे- चीन, जापान, वर्मा, बांग्लादेश, आदि में धान की खेती की जाती है विश्व में इसकी अधिक खपत होने के कारण यह मुख्य फसलों में शुमार है भारतवर्ष में धान की वार्षिक उत्पादकता (117.45 मी0 टन 2019-20) हुई है तथा कीटों द्वारा वार्षिक क्षति 27.9 प्रतिशत है धान के फसलों पर नर्सरी से लेकर फसल कटाई तथा विभिन्न हानिकारक कीटों का आक्रमण होता है जिनका रोकथाम होना अति आवश्यक है

धान का पीला तना छेदक कीट

यह धान की एक विविधाहारी प्रमुख कीट है जिसकी क्षतिग्रस्त अवस्था इल्ली है इस कीट की इल्ली आरम्भ में पत्ती के ऊपर धारी सी बनाती हुई खाती है बाद में वह लगभग 1 सप्ताह बाद पति से होती हुई तने में छेद कर प्रवेश कर जाती है तथा तने के मध्य में रहती है और अंदर ही अंदर खाती है जिसके कारण पौधे की वनस्पतिक बढवार रुक जाती हैं पत्ती पीली पड़ जाती तथा निचली पत्तियां हरी बनी रहती हैं इस दशा को मृतकेंद्र कहते हैं जिन पौधों पर इसका प्रकोप होता है उन पर बालियां नहीं बनती है तथा वह आसानी से उखड़ जाती हैं

नियंत्रण

1- इसके अंडे पत्ती के किनारे दिये जाते हैं अतः इन किनारों को काटकर पौध की रोपाई की जाए तो यह अंडे खेतों तक नहीं पहुंच पाएंगे
2- कीटप्रतिरोधक किस्मों जैसे रत्ना साकेत विजय आदि का प्रयोग करना चाहिए
3- अण्ड परजीवी ट्राईकोग्रामा जपोनिकम का प्रयोग करना चाहिए
4 - पौध रोपाई के 15-20 दिन बाद 4 प्रतिशत या कार्बोफ्यूरान 3 प्रतिशत कण 15-18 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खड़े पानी में प्रयोग करना चाहिए

धान का फड़का

यह कीट हरे या कुछ पीलापन लिए हुए हरे रंग का एवं 30 से 40 सेंटीमीटर लंबा होता है इस कीट के वयस्क व शिशु दोनों ही पत्तियों की कोमल तने को खाते हैं वयस्क कीट की अपेक्षा शिशु अधिक नुकसान पहुंचाते हैं इनके काटने व चबाने वाले मुखाँग होते हैं यह कीट अगस्त- सितंबर माह में सक्रिय रहता है यह धान की फसल को भारी मात्रा में क्षति पहुंचाते हैं

नियंत्रण

1 - फसल कटाई के बाद गहरी जुताई करें जिससे कीट के अण्डकोषो को नष्ट किया जा सकता है
2 - खेत में उपस्थित खरपतवारो को नष्ट कर देना चाहिए
3 - इस कीट को मैना कौवा चील तथा अन्य पक्षियां खाती हैं अतः इन पक्षियों का संरक्षण करना चाहिए
4 - इस कीट की अत्यधिक प्रकोप की दशा में मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत चूर्ण 20-25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से बुरकाव करें

गन्धी बग - (रैंथा, चुषिया, रैन्या,)

यह कीट वर्षा ऋतु आरम्भ होते ही धान की फसल पर आक्रमण करता है इसके प्रौढ़ तथा शिशु दोनों के चुभने व चुसने वाले मुखांग होते हैं जिससे यह धान की कोमल पत्तियों तथा तनों के रस चूसते हैं जिससे पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं तथा उनमें भूरे एवं काले धब्बे पड़ जाते हैं पौधों की बढ़वार रुक जाती है इन कीटों की शरीर से एक विशेष प्रकार की गंध निकलती है जिससे यह आसानी से खेतों में पहचाने जाते हैं इसी कारण से इन्हें गन्धी कीट कहते हैं

नियंत्रण

1 - धान के खेतों के आस-पास खरपतवारो को नष्ट कर देना चाहिए जिससे इन पर पनपने वाला कीट धान पर आक्रमण नहीं कर सके
2 - यह कीट रोशनी की ओर आकर्षित होते हैं आता है इन्हें नियंत्रण के लिए प्रकाश प्रपंच का प्रयोग करना चाहिए
3 - धान की कीट प्रतिरोधी किस्म जैसे- सठिया, सोना आदि का प्रयोग करना चाहिए
4 - फसल पर 20 से 25 किलोग्राम मैलाथियान चूर्ण 2 प्रतिशत अथवा मिथाइल पैरथियान चूर्ण प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव करना चाहिए
5 - नीमसीड करनाल 5 प्रतिशत, 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर का

प्रयोग करें

भूरा फुदका

यह कीट हल्के या गहरे भूरे रंग का होता है इस कीट के क्षति करने का स्वभाव कुछ इस प्रकार है पौधे के तने से रस चूस कर फ्लोएम एवं जाइलम को बंद कर देता है तथा पौधे के तने के मध्य स्थित को खाकर भर देता है इससे पत्तियां सूखी हुई एवं भूरे रंग की प्रतीत होती हैं इस अवस्था को फुदका झुलसा कहा जाता है यह प्रारंभ में एक स्थान पर रहता है परंतु धीरे-धीरे संपूर्ण खेत में फैल जाता है नम मौसम में तथा अधिक नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का प्रयोग करने पर भी इस कीट का प्रकोप अधिक होता है यह किस विषाणु बीमारी भी फैलाते हैं

नियंत्रण

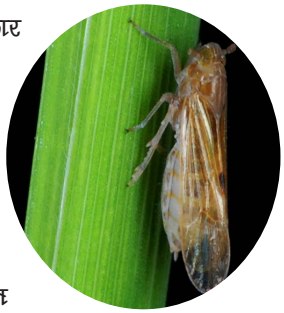

1 – खेतों के आसपास खरपतवार तथा घास आदि नहीं लगने देना चाहिए

2 – नत्रजन युक्त उर्वरक का प्रयोग न्यूनतम करना चाहिए

3 – कीट प्रतिरोधी किस्मों जैसे– ज्योति, रश्मि, प्रतिभा, चौतन्य आदि का प्रयोग करें

4 – खेत से जल निकास की उचित व्यवस्था करें

5 – नीम का तेल 3 प्रतिशत 15 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें

6 – फोजेलॉन 35 EC 1500 एम0 एल0 प्रति हेक्टेयर या क्लोरोपायरीफास 20 EC, 1250 एम0 एल0 प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करें

7 – संश्लेषित पायरेथाइड का प्रयोग करने से बचें

धान का हरा फुदका

यह कीट हरे तथा छोटे आकार के होते हैं यह पत्तियों के ऊपर पाए जाते हैं इनके शिशु तथा प्रौढ दोनों ही पत्तियों के रस चूसते हैं जिसके कारण पत्तियां ऊपर से नीचे की तरफ पीली होने लगती है यह कीट विषाणु रोग जैसे – टुग्रो रोग के वाहक होते हैं

नियंत्रण

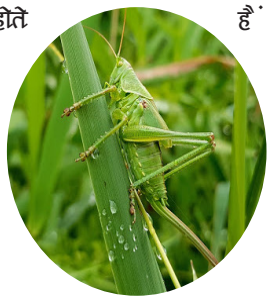

1 – फसल चक्र अपनाएं

2 – गीत प्रतिरोधी किस्मो जैसे– प्ट20, प्ट50, प्ट54, प्ट64, वानी, विक्रम आदि का प्रयोग करें

3 – नर्सरी लगाने के दौरान नीम केक 12.5 किलोग्राम प्रति 20 सेंट का प्रयोग करें

4 – फेनथियान 100 म, 40 एम0 एल0 या मोनोक्रोटोफॉस 36 एस0 एल0, 40 एम एल का प्रयोग करें

5 – एक ही रसायन को बार–बार प्रयोग करने से बचें

गाल मिज

इसके पूर्ण विकसित कीट मच्छर के समान होते हैं जो कि रात्रि के रोशनी में उड़ता हुआ दिखाई देता है इस कीट के नवजात शिशु पत्ती के भीतर भाग के कोमल तने को छेद कर अंदर प्रवेश करते हैं और तने के भीतर भाग को खाते हैं जिससे कि पौधे की बढ़वार रुक जाती है इसी के कारण धान में (सिल्वर शुट या ओनियन लिफ) होता है

नियंत्रण

1 – इसके नियंत्रण के लिए यह संस्तुति की जाती है कि यथासंभव जल्द से जल्द रोपाई कर देनी चाहिए

2 – अधिक उर्वरक के प्रयोग से बचें

3 – खेत में पानी भरा हो तो पानी को खेत से बाहर निकाल देना चाहिए क्योंकि इस कीट का प्रकोप पानी भरे खेत से अधिक होता है

4 – धान की प्रतिरोधी किस्मे जैसे– प्ट36, फाल्गुनी, सुरेखा, अपा. जी, कुंती आदि का प्रयोग करना चाहिए

5 – डायमेथोएट 30 म्ब 20 एम0 एल0 प्रति लीटर पानी में मिलाकर 15 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें

सैनिक कीट

यह कीट मटमैला सफेद रंग की होती है जो बाद में हरे रंग की हो जाती है इस कीट की सूडी काफी सक्रिय और सबसे ज्यादा हानिक. ारक होती है वर्षा के बाद मौसम जब कुछ समय के लिए सूखा रहता है तब इसका प्रकोप अधि ाक होता है यह धान की पत्तियों एवं तने को काटकर हानि पहुंचाती है इनका प्रकोप रात्रि में अधिक होता है तथा दिन में पौधों के कल्लो एवं जड़ों के पास छुपी रहती है यह झुंड में आक्रमण करती हैं इसलिए इसे सैनिक कीट कहते हैं

नियंत्रण

1 – खेत में पानी भरकर सूड़ियों तथा क्रमिकोषो को नष्ट किया जा सकता है

2 – नत्रजन युक्त खाद का न्यूनतम प्रयोग करें

3 – जल निकास की उचित व्यवस्था करें

4 – अगेती बुवाई करें

5 – धान के ऊपरी सिरे को तोड़कर उसके बाद रोपाई करें जिससे अण्डे तथा क्रमिकोष दूसरे खेतों में ना जा सके

6 – क्लोरोपायरीफास 20 म्ब, 0.05 प्रतिशत का प्रभावकारी छिड़काव करें